हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार, 29 जून 2025

तापमान

अधिकतम 36.5 डिग्री
न्यूनतम 24.5 डिग्री

11 कोसली स्टेशन के सौन्दर्यीकरण का काम 95 फीसदी पूरा

12 नागरिक अस्पताल की मांग को लेकर आंदोलन तेज

खबर संक्षेप

ब्रह्मगढ़ परिसर में री सायकल मेला कल

रेवाड़ी। ब्राह्मण सभा की ओर से व्हाई वेस्ट वेडनस-डे फाउंडेशन के तत्वावधान में कचरा मुक्त स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत 30 जून को ब्रह्मगढ़ परिसर में री-सायकल मेला आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राहुल मोदी एडीसी एवं डीएमसी तथा मुख्य वक्ता के रूप में फाउंडेशन की डायरेक्टर डा. रूबी मखीजा उपस्थित रहेंगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्राह्मण सभा के प्रधान चंद्रशेखर गौतम करेंगे। प्रेस सचिव रमेश वशिष्ठ ने बताया कि कार्यक्रम में ई-वेस्ट, प्लास्टिक, कागज का कचरा को लेकर री-सायकल किए हुए कोपियर पेपर, नोटबुक, बैग व पेंसिल वितरित किए जाएंगे। कार्यक्रम में फाउंडेशन की निदेशक कचरे को री-सायकल करने की जानकारी साझा करेंगी। सभा प्रधान चंद्रशेखर गौतम ने नगर पार्षद, सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि, व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधि, जागरूक नागरिकों व पर्यावरण प्रेमियों से कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है।

दानपात्र चोरी में नाबालिग समेत दो गिरफ्तार

कसोला। गढ़ी बोलनी चौकी पुलिस ने मंदिर का दानपात्र चोरी करने के मामले में एक नाबालिग को अभिरक्षा ने लेकर एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान राजस्थान के जिला अलवर के गांव लाडमौड निवासी अजय के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी किया गया दानपात्र बरामद कर लिया है। गांव जड़थल निवासी निहाल सिंह ने अपनी शिकायत में बताया था कि वह अपने गांव के माता मंदिर के ट्रस्ट का प्रधान है। गत 26 जून को उसके गांव के माता के मंदिर से कोई व्यक्ति दानपात्र चोरी करके ले गया। पुलिस ने मामले में संलिप्त एक नाबालिग को अभिरक्षा ने लेकर एक आरोपी राजस्थान के जिला अलवर के गांव लाडमौड निवासी अजय को गिरफ्तार कर लिया है।

धनवंतरी आयुर्वेद पुरस्कार के लिए आवेदन 30 तक

रेवाड़ी। केंद्र सरकार के आयुष मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय धनवंतरी आयुर्वेद पुरस्कार- 2025 के लिए आयुर्वेदिक विशेषज्ञों से 30 जून तक आवेदन मांगे गए हैं। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि राष्ट्रीय धनवंतरी आयुर्वेद पुरस्कार ऐसे आयुर्वेद विशेषज्ञों को प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं, जो भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग अधिनियम अथवा भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार मान्यता प्राप्त योग्यता रखते हैं और जिन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में अपना अपार योगदान दिया है। पुरस्कार विजेताओं को वार्षिक आयुर्वेद दिवस यानी 23 सितंबर को 5 लाख रुपए के पुरस्कार व ट्रॉफी से सम्मानित किया जाएगा। आवेदक गृह मंत्रालय भारत सरकार के राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल अवार्ड्स.जीओवी.इन से जानकारी ले सकते है।

गांव बुड़ाना में मेघवाल समाज की बैठक आज

रेवाड़ी। मेघवाल उत्थान समिति हरियाणा के सचिव भूपेन्द्र शेखपुर ने बताया कि 29 जून को सुबह 9:30 बजे रेवाड़ी ब्लॉक के गांव बुड़ाना में मेघवाल समाज की सभा का आयोजन होगा। मीटिंग में सभी पदाधिकारीगण और महिला शक्ति उपस्थित रहेगी। बैठक में समाज के अनेक मुद्दों पर विचार-विमर्श किया जाएगा ताकि मेघवाल उत्थान समिति को मजबूत मिल सकें। समिति के सचिव भूपेन्द्र शेखपुर ने कहा कि उनका समाज डीएससी समाज का कोई हक नहीं लेना चाहता है। उन्होंने कहा कि उनकी समिति की सरकार से यही मांग है कि चमार, हरिजन व गुवाड़ी जैसे अशोभनीय शब्दों को पूरी तरह से हटा दिया जाए और मेघवाल शब्द से ही जाति प्रमाण पत्र जारी किए जाएं।

दोपहर तक उमस भरी गर्मी, शाम को बादल छाने से बनी बरसात की संभावना

- चार दिन से आसमान में छा रहे बादल, लेकिन बरसात नहीं

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

पिछले चार दिन से आसमान में लगातार बादल छा रहे हैं, लेकिन बरसात नहीं होने से लोगों को गर्मी से राहत नहीं मिल पा रही हैं। हवा में नमी का स्तर बढ़ा हुआ है।

सुबह के समय धूप खिलते ही उमस भरी गर्मी जमकर परेशान करने लगती है। लोगों को अच्छी बरसात होने का इंतजार है। अच्छी बारिश के बाद ही भारी गर्मी से कुछ हद तक राहत मिल सकती है। शनिवार को धूप निकलने के बाद दोपहर तक मौसम साफ रहा, जिससे तेज धूप ने भारी गर्मी का प्रकोप बढ़ा दिया, लेकिन दोपहर बाद शाम तक बरसात के बादल छा जाने से गर्मी से राहत मिली। आसपास के क्षेत्रों में हल्की बरसात भी हुई। अधिकतम तापमान 36.5 डिग्री पर स्थिर रहा, जबकि न्यूनतम तापमान 0.7 डिग्री की कमी के साथ 23.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सुबह 10 बजे के बाद ही खिली तेज धूप ने लोगों का पसीना निकालना शुरू कर दिया। उमस इस कदर बढ़ी हुई है कि कूलर की हवा भी पसीना सुखाने में मददगार साबित नहीं हो रही है। लोग दिन भर भारी गर्मी से परेशान रहते हैं। रात के समय भी गर्मी का असर बढ़ रहा है। मौसम विभाग का अनुमान है कि आगामी सप्ताह से मौसम में बदलाव आ सकता है। आसमान में बादलों के बीच कुछ इलाकों में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। इस दौरान तापमान में भी उतार-चढ़ाव बना रहेगा।

किसानों को बरसात का इंतजार

सप्ताह के शुरू में हुई बरसात के बाद बिजली की खपत में कमी आ गई थी। गर्मी बढ़ने के कारण बिजली की खपत एक बार फिर से बढ़ने लगी है। इस समय जिले में बिजली की खपत लगभग 85 लाख यूनिट चल रही है। आपूर्ति पर्याप्त रहने के कारण पावर कटों से निजात मिली हुई है। गर्मी बढ़ने के बाद बाजरा की फसल को सिंचाई की जरूरत है, जिस कारण कृषि क्षेत्र में बिजली की मांग बढ़ने लगी है। किसान भी बेसब्री से बरसात का इंतजार कर रहे है।

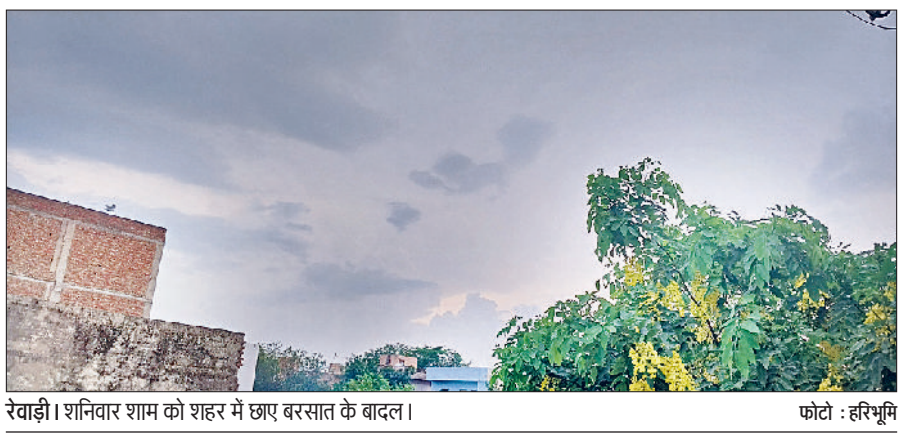

रेवाड़ी। शनिवार शाम को शहर में छाए बरसात के बादल। फोटो : हरिभूमि

नगर परिषद का दावा, गोवंश पकड़कर गोशाला में भेजे जा रहे

शहर की कॉलोनियों व मोहल्लों में लोगों को जान का डर, हमला कर रहे गोवंश

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

शहर में सड़कों पर विचरण करने वाले गोवंश की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

नगर परिषद की ओर से गोवंश को पकड़कर गोशालाओं में भेजने का ठेका दिया हुआ है। शहर की सड़कों पर घूमती ज्यादातार गाय गो-पालकों की है, जिन्हें दूध निकालने के बाद सड़कों पर पेट भरने के लिए छोड़ दिया जाता है, जिसके बाद सड़कों पर गोवंश हिंसक बनकर लोगों को अस्पताल पहुंचाने का काम कर रहे है। जून माह में दो अलग-अलग स्थानों पर आक्रमक रूप में आई गाय 6 लोगों को घायल कर चुकी है। 16 जून को मोहल्ला कुतुबपुर में पांच लोगों व 26 जून को सेक्टर-4 में एक युवक को घायल कर चुकी है। इससे पहले भी गोवंश दो वर्ष में काफी लोगों को घायल कर चुके है। गत वर्षों में गोवंश के हमले से एक फोटोग्राफर डोली व एक बुजुर्ग की जान भी जा चुकी है। इतने लोगों पर हमला होने के बाद भी नगर परिषद सबक नहीं ले रही है। मुख्य मार्गो सहित कॉलोनियों, सेक्टर, मोहल्लों व मेन बाजार में दिन-रात गोवंश का जमावड़ा लगा रहता है। अधिकारियों की बैठक में डीसी सख्त आदेश भी दे चुके है कि जिसकी लापरवाही मिलेगी उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी तथा पालतु गोवंश को खुले में छोड़ने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए गए है।

रेवाड़ी। शुक्रवार रात मोती चौक पर गोवंश का जमावड़ा। फोटो : हरिभूमि

नप के फेल हो चुके स्ट्रे कैटल फ्री के दावे

नगर परिषद की ओर से शहर को स्ट्रे कैटल फ्री बनाने के दावे लंबे समय से किए जा रहे हैं। समस्या स्ट्रे कैटल से ज्यादा पालतू पशुओं की बनी हुई है। एक विशेष वर्ग के लोगों ने दूध बेचने के लिए बड़ी संख्या में गाएं रखी हुई हैं। यह गाएं सुबह-शाम दूध दुहने के समय मालिक के घर पहुंच जाती हैं। दूध निकालने के बाद इन्हें पेट भरने के लिए वापस सड़कों की ओर धकेल दिया जाता है। शहर के प्रमुख सरकुलर रोड से लेकर गली-मोहल्लों व कॉलोनियों तक गोवंश विचरण करते रहते है। नाईवाली चौक, महाराणा प्रताप चौक, ब्रास मार्केट, मोती चौक, पुरानी सब्जीमंडी व नाईवाली सब्जीमंडी पर गायों का सर्वाधिक जमावड़ा रहता है, जिससे दिन भर सड़क पर जाम जैसे हालात बने रहते हैं। गायों के साथ सांड भी काफी संख्या में सड़कों पर देखे जा सकते है।

रेवाड़ी। बावल रोड पर बीच सड़क में खड़ी गाय तथा मेन बाजार में गुजरते लोग व बैठे हुए गोवंश। फोटो : हरिभूमि

पशुपालकों पर शिकंजा कसने में नाकाम प्रशासन

शहर की सड़कों पर घूमने वाली गायों में अधिकांश पशुपालकों की ही हैं। पशुपालक इनका दूध निकालने के बाद पेट भरने के लिए सड़कों पर छोड़ देते हैं। ऐसी गायों को एक बार पकड़ने के बाद नगर परिषद 5 हजार रुपये का जुर्माना करते हुए छोड़ देती है तथा काफी गायों को तो पशुपालक एजेंसी की ओर से पकड़ते समय ही झगड़ा करके छुड़ा ले जाते है। सड़कों पर विचरण करने वाले गोवंश कई लोगों की जान भी ले चुके है। इसके अलावा खुले घूमने वाले सांड मौका मिलते ही राहगीरों पर हमला कर देते हैं। आपस में लड़ते हुए सांड कई वाहन चालकों को घायल कर चुके हैं। बड़ी संख्या में गायों को गोशालाओं में भेजने के दावे सड़कों पर कागजी साबित हो रहे हैं। नगर परिषद के अनुसार टेंडर देने के बाद जनवरी से अब तक एजेंसी 1300 से ज्यादा गोवंश पकड़कर गोशाला में छोड़ चुकी है, लेकिन सड़कों पर अभी भी सैकड़ों गोवंश नजर आ रहे है। गोवंश का दंश शहर के लोगों को ही झेलना पड़ रहा है।

श्याम मंदिर कमेटी ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

- मंदिर के मुख्य मार्ग पर जलभराव की समस्या के समाधान व स्ट्रीट लाइटें लगवाने की मांग
- विधायक अनिल यादव ने किया धन्यवादी दौ, श्याम मंदिर में पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद लिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोसली

शनिवार को धन्यवादी दौरे के दौरान विधायक अनिल यादव ने विश्वकर्मा कॉलोनी स्थित श्याम मंदिर में पूजा-अर्चना कर आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर पंचायत समिति नाहड़ के चेयरमैन दुष्यंत यादव भी मौजूद रहे। मंदिर कमेटी ने विधायक को एक मांग पत्र देकर मंदिर के मुख्य मार्ग पर जलभराव की समस्या के समाधान की मांग रखी। इसके अलावा रात्रि कार्यक्रमों में मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए मंदिर के रास्तों पर स्ट्रीट लाइटें लगवाने की मांग की गई।

मंदिर कमेटी ने मंदिर में पांच किलोवाट की सोलर प्लेट लगवाने की मांग भी रखी। मंदिर कमेटी ने बाजार के मुख्य तिराहे का नाम श्री श्याम चौक रखने की मांग रखते हुए चौंक के सौंदर्याकरण का खर्च मंदिर कमेटी द्वारा करने की बात कही। विधायक ने कहा कि नामकरण के लिए ग्राम पंचायत से प्रस्ताव पास करा कर उन्हें दिया जाए। वह अपनी ओर से पूरा सहयोग करेंगे। उन्होंने मंदिर कमेटी द्वारा की गई मांगों को यथासंभव पूरा करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर मंदिर कमेटी प्रधान भोलाराम सिंघल, लीलूराम स्वामी, रवींद्र यादव पालड़ी, राजेश जांगड़ा, अशोक गोयल, शंकर गर्ग, मुकेश जांगड़ा, शुभम, कपूर, मनोज गुप्ता, ईश्वर गर्ग, रोहित यादव, सतीश गर्ग, हितेश जांगड़ा, तेजपाल गर्ग एडवोकेट, गौरव गर्ग, गोपाल गर्ग, शिव मंदिर कमेटी भाकली मंदिर कमेटी के प्रधान रामफल यादव, सरपंच भाकली श्याम सिंह यादव व पूर्व सूबेदार सुरेश यादव सहित अन्य लोग मौजूद थे।

रेवाड़ी। विधायक अनिल यादव को अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपते मंदिर कमेटी के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

एडवोकेट प्रदीप डागर बने ड्रॉप रोबॉल संघ के उपाध्यक्ष

रेवाड़ी। हरियाणा ड्रॉप रोबॉल संघ की नवीन कार्यकारिणी का गठन रोहतक के निजी होटल में किया गया। आमसभा का आयोजन कर्नल डा. संदीप नैन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जबकि ड्रॉप रोबॉल खेल के संस्थापक एवं पर्यवेक्षक ईश्वर सिंह ने निर्वाचन प्रक्रिया की जिम्मेदारी निभाई। चुनाव में सर्वसम्मति से विधायक पवन खरखौदा को हरियाणा ड्रॉप रोबॉल संघ का अध्यक्ष व एडवोकेट प्रदीप डागर रेवाड़ी को पुनः उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। संघ की नई कार्यकारिणी में वीरेंद्र स्वामी रोहतक को महासचिव, आईएस पंघाल जींद को कोषाध्यक्ष, राजेंद्र कुमार बाढ़ड़ा व सतवीर ऐलनाबाद को सचिव तथा प्रदीप कुमार पानीपत को सहसचिव चुना गया। इसके अलावा प्रवीण बुधवार को तकनीकी निदेशक की जिम्मेदारी सौंपी गई। चुनाव के दौरान देवेंद्र कुमार, जसबीर कुंडू, संदीप बल्हारा, अक्षय कुमार, सन्नी बुधवार व सागर उपस्थित थे। सभी पदाधिकारियों ने राज्य में ड्रॉप रोबॉल खेल को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प लिया।

इन्वेस्टमेंट के नाम पर लाखों की ठगी में दो और आरोपी गिरफ्तार

- इस मामले में तीन आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

साइबर थाना पुलिस ने कंपनी में इन्वेस्टमेंट के नाम पर लाखों रुपये की साइबर ठगी करने के मामले में दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान यूपी के महाराजगंज के गांव तुठीबारी हालआबाद महिन्द्रनगर लोहारा जिला लुधियाना पंजाब निवासी रमेश कुमार सैनी व पंजाब के जिला लुधियाना के गुरुनानक नगर निवासी राजेन्द्र सैनी के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में तीन आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। गत 14 जनवरी को गांव बटोड़ी निवासी अजीत कुमार ने अपनी शिकायत बताया था कि गत वर्ष दिसंबर माह में उसके मोबाइल फोन पर लॉरयल कंपनी के एप का एक लिंक आया था। लिंक पर क्लिक करने के बाद एप इंस्टाल हो गया। उसे एक व्हाट्सगुरुप से जोड़ा गया, जिसमें एप के जरिए पैसा इन्वेस्ट करने पर अच्छा रिटर्न मिलने की बात कही गई थी। उसने झांसे में आकर गत वर्ष 27 दिसंबर से इस साल 6 जनवरी तक आरोपियों के अलग-अलग खातों में कुल 7 लाख 59 हजार 654 रुपये जमा करा दिए। उसने यह राशि अपने व अपने पिता के बैंक खातों के साथ-साथ परिवार के पांच अन्य सदस्यों के खाते से ट्रांसफर कराई थी। जब उसने राशि निकालने का प्रयास किया, तो उसे उसकी रकम वापस नहीं मिली। इसके बाद उसे साइबर ठगी का पता चला। पुलिस ने मामले में संलिप्त तीन आरोपी पंजाब के जिला लुधियाना के हैबोवाल के मोहल्ला रंजोत पार्क निवासी पवन खुल्लर, जिला लुधियाना के बस्ती जोधेवाल की शिमला कॉलोनी निवासी रोहित कालिया, यूपी के जिला आगरा के पिनाहाट निवासी रिषी कुमार को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने शनिवार को मामले में संलिप्त दो और आरोपी रमेश कुमार सैनी व राजेन्द्र सैनी को भी गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी रमेश कुमार सैनी के खाते ने 11 हजार 999 रुपये ट्रांसफर हुए थे।

मुहिम विधायक की पत्नी सविता यादव व एडवोकेट निशांत यादव ने किया नेतृत्व

मॉडल टाउन से पुराना कोर्ट रोड पर चला सफाई अभियान, जेसीबी से साफ करवाई खरपतवार

- पुराना कोर्ट मैदान में लगने वाली रेहड़ियों के संचालकों को अपना कूड़ादान रखने के निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

शहर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने को की मुहिम के तहत शनिवार को विधायक लक्ष्मण यादव की पत्नी सविता यादव तथा एडवोकेट निशांत यादव के नेतृत्व में बस स्टैंड से रेडक्रॉस भवन तक सफाई अभियान चलाया गया।

कार्यक्रम का आगाज बस स्टैंड से मॉडल टाउन को जाने वाले चौक पर स्थित हनुमान मंदिर से किया गया। यहां से मॉडल टाउन, शिव चौक, पुराना कोर्ट रोड, जेल परिसर, जेल परिसर के सामने खाली मैदान से लेकर रेडक्रॉस कार्यालय परिसर में सफाई की गई। पुराना कोर्ट मैदान में लगने वाली रेहड़ी संचालकों को अपना कूड़ादान रखने के निर्देश दिए गए तथा मैदान की साफ-सफाई के लिए दो वॉलेंटियर्स की तैनाती करने का निर्णय लिया गया, जो मैदान तथा आसपास के क्षेत्र की साफ-व्यवस्था की निगरानी रखेंगे। जेसीबी मशीन की मदद से सड़क के आसपास रखी कबाड़ बनी रेहडियों का भी निस्तारण किया गया व जेसीबी से जेल परिसर व रेडक्रॉस कार्यालय परिसर की खरपतवार को साफ किया गया। इस मौके पर डब्ल्यूसीडीपीओ सुमन यादव के नेतृत्व में आंगनबाड़ी कार्यकतार्ओं ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का सार्थक संदेश भी दिया।

अभियान के बाद अग्रवाल भवन में यादव कल्याण सभा, पंजाबी सभा, जांगिड़ ब्राह्मण सभा तथा अग्रवाल सभा की ओर से समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सफाई अभियान के दौरान नियमित सहयोग प्रदान करने वाले गणमान्य लोगों, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों तथा सफाई योद्धाओं को सम्मानित किया गया। सफाई योद्धाओं को फिट रखने के लिए योगासन भी कराए गए। इस मौके पर एडवोकेट निशांत यादव ने कहा कि रेवाड़ी को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने का यह सफाई अभियान लगातार जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि सफाई अभियान को लगातार आमजन का समर्थन मिल रहा है तथा उसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। इस अवसर पर विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी,गणमान्य लोग तथा सफाई योद्धा मौजूद थे।

रेवाड़ी। शिव चौक पर सफाई करते हुए विधायक की टीम तथा रेडक्रास भवन में खरपतवार साफ करती जेसीबी। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में चोरी करने वाले के आरोपी। फोटो : हरिभूमि

कृषि फार्म से चोरी के तीन और आरोपी काबू

धारूहेड़ा। सेक्टर-6 धारूहेड़ा थाना पुलिस ने गांव गढ़ी अलावलपुर में एक कृषि फार्म के कमरे का ताला तोड़कर सामान चोरी करने के मामले में तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों पहचान यूपी के जिला बरेली के गांव मंढोरा निवासी युनुस, मोनिश व शानू के रुप में हुई है। पुलिस इस मामले में दो आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। गत 26 जून को गांव गढ़ी अलावलपुर निवासी संजीत ने अपनी शिकायत में बताया था कि उसका गांव में एक कृषि फार्म है, जिसकी रेडिमेड चारदीवारी बनाई हुई है। कृषि फार्म में उसने एक कमरा बनाया हुआ है। जब वह 26 जून की सुबह अपने फार्म पर गया तो कमरे का ताला टूटा हुआ था। चोर कमरे से एक स्पलिट ऐसी, गैस सिलेंडर, 12 फव्वारा नोजल व लेबर के सामान सहित काफी सामान चोरी कर ले गए। संजीत ने आरोप लगाया था कि चोरी की वारदात को गांव के ही आकाश, मन्नू व उनके अन्य साथियों ने अंजाम दिया है। पुलिस ने मामले में संलिप्त दो आरोपी गांव गढ़ी अलावलपुर निवासी आकाश व मन्नू को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्होंने सामान कबाड़ी का काम करने वाले यूपी निवासी युनुस व उसके दो भाई मोनिश व शानू को बेच दिया है। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त तीन और आरोपी युनुस, मोनिश व शानू को भी गिरफ्तार कर लिया है।

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वहीं लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आयः एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्तः एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटीः एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभः एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंगः एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरणः एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

सरकार कर्मचारियों के साथ कर रही अन्याय

डा. अरविंद यादव

रेवाड़ी। हरियाणा सरकार की ओर से केंद्र सरकार की तर्ज पर एक अगस्त 2025 से एकीकृत पेंशन योजना यानि यूपीएस लागू करने के फैसले से हरियाणा के कर्मचारियों में रोष है। कर्मचारियों ने इस योजना को एनपीएस से भी ज्यादा खतरनाक बताया है। पेंशन बहाली संघर्ष समिति के जिला रेवाड़ी प्रभारी डा. अरविंद यादव ने कहा कि हरियाणा सरकार यूपीएस लागू करके प्रदेश के कर्मचारियों के साथ अन्याय कर रही है, जब प्रदेश के कर्मचारी यूपीएस का विरोध कर रहे हैं तो इसे लागू करने से पहले कर्मचारी प्रतिनिधियों से विचार विमर्श करना चाहिए था, लेकिन सरकार का रवैया ठीक नहीं है। सरकार को यह स्कीम इतनी अच्छी लगती है तो अपने ऊपर लागू क्यों नहीं करती।

अज्ञात वाहन ने बाइक को मारी टक्कर, एक की मौत

महेंद्रगढ़। सतनाली-नावां रोड पर अज्ञात वाहन ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार व्यक्ति की मौत हो गई है। सतनाली पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। मृतक की पत्नी के बयान पर पुलिस ने अज्ञात ड्राइवर के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव खेड़ी फिलहाल सतनाली निवासी पूजा ने पुलिस में दिए बयान में बताया कि उसका 42 वर्षीय पति नरेश हलवाई का काम करता था। शुक्रवार देर शाम वह सतनाली से बाइक पर अपने गांव खेड़ी गया था। वह अपने गांव खेड़ी से वापस सतनाली आ रहा था। सतनाली व नावां के बीच अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी, जिससे वह घायल हो गया। घायल को सरकारी अस्पताल सतनाली में लाया गया।

ग्रीष्मकालीन अवकाश में भीड़ को देखते हुए रेलवे की ओर से यात्रियों को ट्रेनों में दी जा रही राहत

यात्रियों को अगस्त तक मिली सुविधा,46 जोड़ी रेलसेवाओं में एक जुलाई से विभिन्न श्रेणी के 120 डिब्बों की होगी बढ़ोतरी

बढ़ाए गए अतिरिक्त कोच की सुविधा अगस्त के पहले सप्ताह तक जारी रहेगी : सीपीआरओ

5 साधारण श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की

हरिभूमि न्यूज ⏭| रेवाड़ी

रेवाड़ी। रेवाड़ी रेलमार्ग से गुजरती एक्सप्रेस ट्रेन फोटो: हरिभूमि

रेलवे प्रशासन की ओर से अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए 46 जोड़ी रेलसेवाओं में विभिन्न श्रेणी के 120 डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। रेलवे की ओर से ग्रीष्मकालीन अवकाश में भीड़ को देखते हुए यात्रियों को ट्रेनों में राहत दी जा रही है। उत्तर पश्चिम रेलवे के सीपीआरओ कैप्टन शशि किरण ने बताया कि ट्रेनों में एक जुलाई से अतिरिक्त कोच बढाएं जा रहे है, यह सुविधा अगस्त के पहले वीक तक जारी रहेगी।

रेवाड़ी-हिसार ट्रेन में पांच डिब्बों की बढ़ोतरी

गाड़ी संख्या 19617/19618 मदार-रेवाड़ी-मदार रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19620/19619 रेवाड़ी-फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 59632/59631 रेवाड़ी-हिसार-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19622/19621 रेवाड़ी-फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 59630/59629 फुलेरा-जयपुर-फुलेरा रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे तथा गाड़ी संख्या 09635/09636 जयपुर-रेवाड़ी-जयपुर रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे बढ़ाए जा रहे है।

श्रीगंगानगर-बठिंडा एक्सप्रेस में पांच डिब्बे बढ़ाए

गाड़ी संख्या 54756/54755 श्रीगंगानगर-बठिंडा-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 54766/54765 बठिण्डा-धुरी-बठिण्डा एक्सप्रेस में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20475/20476 बीकानेर-मिरज-बीकानेर रेलसेवा में बीकानेर से 7 जुलाई से 28 जुलाई तक एवं मिरज से 8 जुलाई से 29 जुलाई तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 04711/04712 बीकानेर-बान्द्रा टर्मिनस-बीकानेर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन में बीकानेर से 2 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं बान्द्रा टर्मिनस से 3 जुलाई से 31 जुलाई तक 1 द्वितीय शयनयान व 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 22497/22498 श्रीगंगानगर-तिरूच्चिराप्पल्लि-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस में श्रीगंगानगर से 7 जुलाई से 28 जुलाई तक एवं तिरूच्चिराप्पल्लि से 11 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20481/20482 भगत की कोठी-तिरूच्चिराप्पल्लि- भगत की कोठी एक्सप्रेस में भगत की कोठी से 2 जुलाई से 30 जुलाई तक एवं तिरूच्चिराप्पल्लि से 5 जुलाई से 2 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12985/12986, जयपुर-दिल्ली सराय-जयपुर रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 1 वातानुकूलित कुर्सीयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12482/12481 श्रीगंगानगर-दिल्ली-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस रेलसेवा में श्रीगंगानगर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं दिल्ली से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14731/14732 दिल्ली-बठिण्डा-दिल्ली एक्सप्रेस में दिल्ली से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं बठिण्डा से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे तथा गाड़ी संख्या 04717/04718 हिसार-तिरूपति-हिसार स्पेशल रेलसेवा में हिसार से 5 जुलाई से 26 जुलाई तक एवं तिरूपति से 7 जुलाई से 28 जुलाई तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे की बढ़ोतरी की जा रही है।

जयपुर-दिल्ली कैंट ट्रेन में द्वितीय शयनयान बढ़ा

गाड़ी संख्या 22471/22472 बीकानेर-दिल्ली सराय-बीकानेर रेलसेवा में बीकानेर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा दिल्ली सराय से 3 जुलाई से 2 अगस्त तक 1 सैकेंड एसी व 2 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। गाड़ी संख्या 20473/20474 दिल्ली सराय-उदयपुर सिटी-दिल्ली सराय रेलसेवा में दिल्ली सराय से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा उदयपुर सिटी से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 सैकेंड एसी व 2 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14707/14708 बीकानेर-दादर-बीकानेर ट्रेन में बीकानेर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं दादर से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 थर्ड एसी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12991/12992 उदयपुर सिटी-जयपुर-उदयपुर सिटी रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तक 2 द्वितीय कुर्सीयान व 1 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाडी संख्या 22977/22978 जयपुर-जोधपुर-जयपुर रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 1 सैकेंड एसी व 1 फर्स्ट मय सैकेंड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19611/19614 अजमेर-अमृतसर-अजमेर रेलसेवा में अजमेर से 2 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा अमृतसर से 3 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19613/19612 अजमेर-अमृतसर-अजमेर रेलसेवा में अजमेर से 2 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा अमृतसर से 3 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19608/19607 मदार-कोलकाता-मदार एक्सप्रेस में मदार से 7 जुलाई से 28 जुलाई तक एवं कोलकाता से 10 जुलाई से 31 जुलाई तक 1 सैकेंड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12065/12066 अजमेर-दिल्ली सराय रोहिल्ला-अजमेर जन शताब्दी में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तक 1 द्वितीय कुर्सीयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 19701/19702 जयपुर-दिल्ली कैंट-जयपुर रेलसेवा में जयपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा दिल्ली कैंट से 3 जुलाई से 2 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20409/20410 दिल्ली कैंट-बठिण्डा-दिल्ली कैंट रेलसेवा में 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14801/14802 जोधपुर-इंदौर-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं इंदौर से 4 जुलाई से 3 अगस्त तक 3 द्वितीय शयनयान व 2 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12465/12466 इंदौर-भगत की कोठी-इंदौर रेलसेवा में इंदौर से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक एवं भगत की कोठी से 3 जुलाई से 2 अगस्त तक 3 द्वितीय शयनयान व 2 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 09721/09722 जयपुर-उदयपुर सिटी-जयपुर रेलसेवा में जयपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं उदयपुर सिटी से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 साधारण श्रेणी डिब्बे तथा गाड़ी संख्या 20987/20988 उदयपुर सिटी-असारवा-उदयपुर सिटी रेलसेवा में उदयपुर सिटी से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं असारवा से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 साधारण श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

अजमेर-बान्द्रा टर्मिनस स्पेशल ट्रेन में बढ़ाए डिब्बे

गाड़ी संख्या 14854/14853 जोधपुर-वाराणसी सिटी-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा वाराणसी सिटी से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14864/14863 जोधपुर-वाराणसी सिटी-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा वाराणसी सिटी से जुलाई से 1 अगस्त तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14866/14865 जोधपुर-वाराणसी सिटी-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा वाराणसी सिटी से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 थर्ड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 22987/22988 अजमेर-आगराफोर्ट -अजमेर रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 2 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14807/14808 जोधपुर-दादर-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 जुलाई से 29 जुलाई तक एवं दादर से 2 जुलाई से 30 जुलाई तक 2 थर्ड एसी, 2 द्वितीय शयनयान व 1 थर्ड एसी इकोनोमी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20483/20484 भगत की कोठी-दादर-भगत की कोठी रेलसेवा में भगत की कोठी से 3 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं दादर से 4 जुलाई से 1 अगस्त तक 2 थर्ड एसी, 2 द्वितीय शयनयान व 1 थर्ड एसी इकोनोमी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20485/20486 जोधपुर-साबरमती-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं साबरमती से 3 जुलाई से 2 अगस्त तक 1 थर्ड एसी व 2 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20492/20491 साबरमती- जैसलमेर-साबरमती रेलसेवा में साबरमती से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं जैसलमेर से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 थर्ड एसी व 2 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14717/14718 बीकानेर-हरिद्वार-बीकानेर रेलसेवा में बीकानेर से 2 जुलाई से 31 जुलाई तक एवं हरिद्वार से 3 जुलाई से 31 जुलाई तक 1 थर्ड एसी व 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 12988/12987 अजमेर-सियालदाह-अजमेर रेलसेवा में अजमेर से 1 जुलाई से 31 जुलाई तक तथा सियालदाह से 2 जुलाई से 1 अगस्त तक 1 फर्स्ट मय सैकेंड एसी श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 09653/09654 अजमेर-बान्द्रा टर्मिनस-अजमेर स्पेशल ट्रेन में अजमेर से 5 जुलाई से 26 जुलाई तक एवं बान्द्रा टर्मिनस से 6 जुलाई से 27 जुलाई तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 09627/09628 अजमेर-सोलापुर-अजमेर स्पेशल में अजमेर से 2 जुलाई से 30 जुलाई तक एवं सोलापुर से 3 जुलाई से 31 जुलाई तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 14735/14736 श्रीगंगानगर-अंबाला-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 04705/04706 श्रीगंगानगर-जयपुर-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस रेलसेवा में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बे तथा गाड़ी संख्या 54754/54753 श्रीगंगानगर-बठिण्डा-श्रीगंगानगर एक्सप्रेस में 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 5 साधारण श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

स्वर्ण व्यापारियों को राजस्थान पुलिस ले जा रही उठाकर, एसपी से रोकने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭| नारनौल

नारनौल। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ को ज्ञापन सौंपते स्वर्णकार समाज के लोग। फोटो: हरिभूमि

सर्राफा एसोसिएशन व मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार सभा ने राजस्थान पुलिस द्वारा स्थानीय पुलिस को बिना सूचित किए यहां के स्वर्ण व्यापारियों को उठाकर ले जाने बारे पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ को एक ज्ञापन सौंपा तथा स्वर्ण व्यापारियों पर हो रहे इस जुल्म को रोकने की मांग की।

नारनौल सर्राफा एसोसिएशन के प्रधान सुरेंद्र सोनी, मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार सभा के प्रधान राजेंद्र प्रसाद सोनी व राष्ट्रीय स्वर्णकार राजनीतिक भागीदारी मंच जिला महेंद्रगढ़ के प्रधान शंकर लाल सोनी ने बताया कि राजस्थान की पुलिस बिना स्थानीय पुलिस स्टेशन को सूचित किए हुए यहां के व्यापारियों को उठाकर ले जाती है, जो की कानून के लिहाज से पूरी तरह गलत है। सभी स्वर्णकार समाज एवं सर्राफा एसोसिएशन के सदस्य व्यापारियों ने पुलिस अधीक्षक से मांग करते हुए कहा कि वे स्वयं सुनिश्चित कराएं कि जब किसी अन्य राज्य की पुलिस शहर में आती है तो वह स्थानीय पुलिस स्टेशन में सूचित करें और यहां की पुलिस को अपने साथ लेकर आए। उसके बाद ही वह अपनी कार्रवाई करें। उन्होंने मांग करते हुए कहा कि पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में स्थानीय पुलिस सुनिश्चित करे, उसके बाद ही अन्य राज्य की पुलिस यहां के व्यापारियों को पूछताछ के लिए अपने साथ लेकर जाए। पुलिस अधीक्षक ने सभी सर्राफा व्यापारी एवं स्वर्णकार समाज के लोगों की बातों को पूरे ध्यान से सुना और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे इसके ऊपर आगे से इस पर पूरी तरह अमल कराने की कोशिश करेंगी।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर पूर्व पार्षद एवं ग्रीवेंस कमेटी के पूर्व सदस्य दयानंद सोनी, प्रधान सर्राफा एसोसिएशन सुरेंद्र सोनी, प्रधान स्वर्णकार समाज राजेंद्र प्रसाद सोनी, जिला अध्यक्ष शंकरलाल सोनी, उपप्रधान सर्राफा एसो. भारत जोहरी, कुणाल सोनी, नंदलाल सोनी, मोतीराम सोनी, जोनी सोनी, आदि मौजूद रहे।

नारनौल। कार्यक्रम में भाग लेते शिक्षक। फोटो: हरिभूमि

राव नेतराम स्कूल में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

नारनौल। सीबीएसई की निर्देशानुसार राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस विषय जानकारी देते हुए विद्यालय प्राचार्या अनिता देवी ने बताया कि विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यशाला में 60 शिक्षकों भाग लिया। जिसका विषय लाइफ स्कील था। प्रशिक्षण कार्यशाला में सीबीएसई की ओर से निर्धारित रिसोर्स पर्सन डॉ. राममोहन वशिष्ठ व नरोतमा शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंने बताया कि सीबीएसई की ओर से सभी अध्यापकों को 25 घंटे का प्रशिक्षण अनिवार्य है। कार्यशाला में शिक्षकों के साथ विभीन्न विषयों पर चर्चा हुई कि किस प्रकार बच्चों को औश्र अच्छी शिक्षा व बेहतर वातावरण के साथ अच्छे परिणाम दिए जा सके। जिसके लिए बच्चों के साथ कक्षा में चर्चा, डिबेट, कहानी, गीत, ड्रामा व खेल-खेल में सिखाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को बूथ स्तर तक सफल बनाएं : यतेंद्र राव

हरिभूमि न्यूज ⏭| नारनौल

नारनौल। बैठक को संबोधित करते भाजपा जिलाध्यक्ष यतेंद्र राव। फोटो: हरिभूमि

भाजपा जिला कार्यालय में मन की बात कार्यक्रम को लेकर एक बैठक रखी गई। जिसकी अध्यक्षता करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव ने की। बैठक में इस बार पीएम के लोकप्रिय कार्यक्रम को बूथ स्तर तक सफल बनाने व हर बूथ पर सक्रियता बढ़ाने इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। पिछले महीने भी जिला टीम ने सभी 772 बूथों पर शत प्रतिशत रिपोर्टिंग संगठन की सरल ऐप पर की थी। जिसके लिए टीम को मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष व संगठन मंत्री ने पंचकूला में सराहा था। इस बार भी शत प्रतिशत का लक्ष्य है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 29 जून सुबह 11 बजे अपने मन की बात के माध्यम से देश को संबोधित करेगें। हर महीने प्रसारित होने वाले मन की बात कार्यक्रम की यह 123वीं कड़ी होगी। प्रधानमंत्री मोदी आमतौर पर हर माह आखिरी रविवार को सुबह 11 बजे रेडियो के माध्यम से देशवासियों से मन की बात करते हैं। प्रधानमंत्री का लोगों के साथ यह संवाद काफी लोकप्रिय है। इस रेडियो कार्यक्रम को तमाम न्यूज चैनल भी प्रसारित करते हैं। इस कार्यक्रम के लिए आप भी अपने विचार व सुझाव साझा कर सकते है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी उनमें से कुछ चयनित विचारों व सुझावों को अपने कार्यक्रम में शामिल करते हैं। यतेंद्र राव ने कि आप टोल फ्री नंबर 1800117800 पर फोन कर संदेश रिकॉर्ड करा सकते हैं। इस मौके पर मुकेश, मंजीत, हरपाल, वीरेंद्र, प्रवीण, मनोज कुमार, मनोज यादव, कर्मवीर, प्रमोद, सुभाष, अशोक, संदीप, दीपिका, बेबी देवी, किशनलाल, संजय अमन, आनंद मेहता, विकास अग्रवाल आदि मौजूद थे।

रेवाड़ी। गांव मुसेपुर में आयोजित शिविर में योग करते ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

नियमित रूप से की गई योग क्रियाएं रोगों से रखती हैं दूर

हरिभूमि न्यूज ⏭| रेवाड़ी

पतंजलि योग समिति की ओर से शनिवार को गांव मस्तापुर स्थित पीपली वाला मंदिर में निःशुल्क योग विज्ञान शिविर का शुभारंभ किया।

मीडिया प्रभारी मुकेश कुमार ने कहा कि शिविर का मुख्य उद्देश्य आमजन को जागरूक कर योग विज्ञान के साथ जोड़कर रोग मुक्त भारत का निर्माण करना है। समिति के जिला प्रभारी दयाराम आर्य के नेतृत्व में वरिष्ठ योग शिक्षक सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक समय सिंह आर्य तथा पतंजलि योग समिति जिला महिला प्रभारी सरोज आर्या ने योग शिविर का शुभारंभ किया। योग प्रोटोकॉल का अभ्यास सत्र आयोजित कर योग प्राणायाम के महत्व पर प्रकाश डाला। योग प्राणायाम के नियमित अभ्यास से हम अपने तन मन को स्वस्थ रख कर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

बीकानेर के मंडल रेल प्रबंधक ने कोसली स्टेशन के पुनर्विकास कार्यों का निरीक्षण किया

कोसली रेलवे स्टेशन के सौन्दर्यीकरण का 95 प्रतिशत कार्य पूर्ण, शेष तीव्र गति से होगा पूरा

40 किलोवाट का सोलर ऊर्जा प्लांट भी लगेगा

हरिभूमि न्यूज ⏭| कोसली

बीकानेर के मंडल रेल प्रबंधक डा. आशीष कुमार ने शनिवार को कोसली स्टेशन पर 13.90 करोड़ की लागत से हो रहे पुनर्विकास कार्यों का निरीक्षण किया।

मंडल रेल प्रबंधक ने प्लेटफॉर्म, सकुर्लेटिंग एरिया, स्टेशन कक्ष व बुकिंग ऑफिस का निरीक्षण किया एवं संरक्षा को लेकर विशेष दिशा निर्देश- दिए। मंडल रेल प्रबंधक ने बताया कि स्टेशन पर करीब 95 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है, शेष कार्य तीव्र गति से पूरा किया जाएगा तथा हरित ऊर्जा के लिए 21 लाख रुपए की लागत से 40 किलोवाट का सोलर प्लांट भी स्थापित किया जाएगा। स्टेशन पर 6.62 करोड़ की लागत से 12 मीटर चौड़ा फुट ओवरब्रिज भी बनेगा। मंडल रेल प्रबंधक ने बताया कि इन कार्यों के अलावा सौंदर्य वर्धन के लिए एलईडी लाइटिंग व दीवारों पर आर्टवर्क भी किया जाएगा, स्टेशन के पुनर्विकास में स्थानीय कला एवं संस्कृति का समावेश भी किया जाएगा। इन सभी सुविधाओं का दिव्यांगजनों तक पहुंच बनाने के लिए उपयुक्त साइनेज भी लगाया जाएगा। इसके अलावा यात्री सूचना प्रणाली में सुधार के लिए कोच गाइडेंस डिस्प्ले बोर्ड, मल्टीलाइन डिस्पले बोर्ड्स, सिंगल लाइन डिस्प्ले बोर्ड, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, बड़े एलइडी स्क्रीन्स तथा जीपीएस आधारित डिजिटल क्लॉक भी लगाया जाएगा। मंडल रेल प्रबंधक डा. आशीष ने बताया कि स्टेशन की प्रकाश व्यवस्था, सुगम, निर्बाध एवं निरंतर तकनीकी रेल कार्यों के संचालन के लिए हरित ऊर्जा उत्पादन के लिए लगभग 21 लाख रुपए की लागत से 40 किलोवाट का सोलर ऊर्जा प्लांट भी स्थापित किया जाएगा।

रेवाड़ी। कोसली स्टेशन के विकास कार्यों का निरीक्षण करते मंडल प्रबंधक व अन्य अधिकारी फोटो: हरिभूमि

यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं मिलेंगी

मंडल रेल प्रबंधक डा. आशीष कुमार ने बताया कि अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत स्टेशनों के पुनर्विकसित होने से यात्रियों को आधुनिक सुविधाएं मिलेंगी,आवागमन सुगम होगा एवं व्यापारी वर्ग भी लाभान्वित होगा। स्टेशन के पुनर्विकास से स्थानीय कारीगर एवं मजदूरों को रोजगार मिला है, जिससे उनकी आय बढ़ी है। मंडल रेल प्रबंधक ने बताया कि स्टेशनों के पुनर्विकसित होने से पर्यटन, स्थानीय हस्तशिल्प कला को बढ़ावा मिलेगा, जिससे क्षेत्र की लोकप्रियता बढ़ेगी एवं साथ रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। इस प्रकार स्टेशन के पुनर्विकास से क्षेत्र का आर्थिक और सामाजिक विकास भी होगा। इस मौके पर मंडल वाणिज्य प्रबंधक वीरेंद्र जोशी, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर दक्षिण विष्णु चौधरी, निजी सचिव धीरज थानवी, सीएमआई गोतम शर्मा व स्टेशन अधीक्षक महेंद्र सिंह मीणा सहित रेलवे के अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

खबर संक्षेप

सीबीएसई की ओर से दिया गया शिक्षकों को प्रशिक्षण

खोरी। सीबीएसई की ओर से सभी विद्यालयों में शिक्षकों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना अनिवार्य है। इसी क्रम में शनिवार को न्यू ऐरा स्कूल कुंड में शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में एमबीडी ग्रुप ने सहयोग किया। रिसोर्स पर्सन रीति मल्होत्रा ने शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया। उनके साथ मिस दीखा भी उपस्थित थी। एमबीडी ग्रुप की ओर से विकास और भूपेंद्र मौजूद थे। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से तीन विषयों को कवर किया गया। शिक्षकों को अनुभवात्मक शिक्षण, कक्षा प्रबंधन व 21वीं सदी के कौशल की जानकारी दी गई। इस सत्र के माध्यम से शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों को समझने और कक्षा में प्रभावी रूप से लागू करने के महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। विद्यालय स्टाफ ने एमबीडी ग्रुप तथा रिसोर्स पर्सन का आभार व्यक्त किया।

छठी कक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन 29 तक मांगे

रेवाड़ी। जवाहर नवोदय विद्यालय नैचाना में आगामी सत्र 2026-27 के लिए कक्षा छठी में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। कक्षा छठी में प्रवेश के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई निर्धारित की गई है। छठी कक्षा में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा आगामी 13 दिसंबर को सुबह 11:30 बजे आयोजित होगी। डीसी एवं चेयरमैन जेएनवी नैचाना अभिषेक मीणा ने बताया कि जवाहर नवोदय विद्यालय केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत पूर्णतया आवासीय विद्यालय है, जिसमें छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास उपलब्ध है। इसके अलावा विद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा के साथ भोजन, वर्दी एवं अन्य दैनिक उपयोग सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। पात्र अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन स्वयं के स्तर पर अथवा गांव नैचाना स्थित जेएनवी से कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन करने के लिए अभ्यर्थी को फोटो एवं आधार कार्ड की आवश्यकता होगी। अभ्यर्थी और अभिभावक के हस्ताक्षर भी अपलोड करने होंगे।

12 दिनों से ग्रामीणों का धरना, अनेक संगठन, गांव व राजनीतिक दल दे चुके समर्थन

नागरिक अस्पताल के लिए रामगढ़ में आंदोलन तेज, आज महापंचायत में होगी रूपरेखा तैयार

- भगवानपुर गांव ने सबसे पहले अस्पताल के लिए जमीन देने का प्रस्ताव दिया था

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

रेवाड़ी। रामगढ़ भगवानपुर में धरने पर बैठे ग्रामीण तथा रामगढ़ भगवानपुर में धरने पर बैठी महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

शहर में 200 बेड के सरकारी अस्पताल को लेकर चल रहा विवाद बढ़ता जा रहा है। ग्रामीणों की ओर से रविवार को भगवानपुर गांव में महापंचायत का आयोजन किया जाएगा।

महापंचायत में आगामी आंदोलन की रूपरेखा तय की जाएगी। भगवानपुर गांव ने सबसे पहले अस्पताल के लिए जमीन देने का प्रस्ताव दिया था। उस समय केंद्रीय राज्यमंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने वादा किया था कि अस्पताल के साथ पानी के वाटर टैंक भी बनवाएं जाएंगे, जिसके लिए गांव ने जमीन देने का प्रस्ताव कर दिया था। अब प्रशासन दूसरे गांवों में अस्पताल के लिए जमीन तलाश रहा है, जिससे रामगढ़ भगवानपुर के ग्रामीणों में काफी रोष है। रामगढ़-भगवानपुर अस्पताल बनाओ संघर्ष कमेटी की ओर से नागरिक अस्पताल बनाने की मांग को लेकर 12 दिन से अनिश्चितकालीन धरना दिया जा रहा है। शनिवार को धरने पर रामगढ़ भगवानपुर सहित गांव मीरपुर, बुडानी, बुड़ाना, फिदेडी, हांसाका, बालियर खुर्द, खलियावास, घीलावास, फदनी तथा तुर्कियावास के सैकड़ों ग्रामीण व महिलाएं शामिल हुए। सभी ने रविवार को होने वाली महापंचायत के लिए अपने-अपने सुझाव रखे। धरने का संचालन अभय सिंह सामाजिक कार्यकर्ता फिदेड़ी ने किया। इस मौके पर सत्यप्रकाश मीरपुर रिटायर्ड वैलफेयर ऑफिसर, अशोक कुमार पूर्व सरपंच मीरपुर, रामफल पूर्व सरपंच घीलावास, हरिओम रिटायर्ड हैड मास्टर, एम्स संघर्ष समिति के प्रवक्ता कॉमरेड राजेन्द्र सिंह, रमेश चंद्र एडवोकेट, कंवर सिंह पूर्व सरपंच मीरपुर, खजान सिंह पूर्व सरपंच बुड़ानी, मास्टर प्रेम प्रकाश बुड़ाना, अनिल सरपंच प्रतिनिधि भगवानपुर, मनोज अन्ना व अरविंद रिटायर्ड हैड मास्टर ने कहा कि ग्रामीण महा पंचायत में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर मांग को बुलंद करें। वक्ताओं ने कहा कि रामगढ़ भगवानपुर गांव में 200 बेड का अस्पताल बनाने की एकदम जायज है। भौगोलिक दृष्टि से भी इससे उपयुक्त जगह कोई और नहीं है। भगवानपुर गांव ने शहर की प्यास बुझाने के लिए जलघर के लिए 10 एकड़ जमीन इस शर्त पर दी थी कि गांव में 200 बेड का नागरिक अस्पताल बनाया जाएगा। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने अस्पताल बनाने का आश्वासन दिया था, लेकिन 10 एकड़ जलघर की रजिस्ट्री कराने के बाद अस्पताल बनाने का वादा तोड़ दिया गया। अब ग्रामीणों की एकता को तोड़ने की राजनीति की जा रही है, लेकिन अब इलाके की जनता जाग चुकी है। यदि सरकार ने हमारी मांग नहीं मानी तो महापंचायत एक ताकतवर आंदोलन का सूत्रपात करेगी। भगवानपुर के सरपंच प्रतिनिधि अनिल कुमार ने कहा कि गांव के नजदीक नया बस स्टैंड, इंदिरा गांधी मीरपुर यूनिवर्सिटी तथा शहर की 40 कालोनियां नजदीक हैं। रामगढ़ में अस्पताल बनने से आसपास के 50 गांवों को नजदीक होने का सीधा फायदा मिलेगा।

यह रहे धरने पर मौजूद

शनिवार को धरने पर सत्यबीर सिंह पूर्व सरपंच, कुलदीप, बीरेंद्र सिंह यादव, कंवर सिंह हैड मास्टर,लाल सिंह, पृथ्वी सिंह, श्रीराम बालियर खुर्द, मोहर सिंह, खजान सिंह,नवल सिंह, बाबूलाल शर्मा बुड़ाना, प्रताप सिंह खलियावास, कंवर पाल हांसाका, इंद्रजीत, रायसिंह, धर्मेन्द्र, नाहर सिंह, नरेश कुमार, सूबे सिंह, नित्यानंद, अनिल, शेर सिंह, जगदीश, भागमल, राजकुमार, उमेद सिंह, विजय कुमार, वेदप्रकाश, हरिओम, संजय, रामगिरी, कमला, ग्यारसी, दिव्या, सुनीता, सविता, प्रमिला, रमेश देवी, ममता, बीरबती, आदि मौजूद रहे।

रेवाड़ी। ग्रामवासियों को पौधे वितरित करते आयोजक। फोटो : हरिभूमि

टींट में चला अभियान

ग्रामीणों ने अनेक पौधे लगाकर देखभाल का लिया संकल्प

- बाबा गोपाल दास टीम ने पौधों में पानी देने और उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी ली

हरिभूमि न्यूज ⏭कुंड

खंड खोल के गांव टींट में शनिवार को पौधारोपण अभियान चलाया गया। अभियान में युवाओं, महिलाओं व बच्चों ने भी भाग लिया। सभी ने मिलकर गांव में अनेक स्थानों पर पौधारोपण किया और उसके सरंक्षण का संकल्प लिया।

इस मौके पर ग्रामवासियों को पौधे भी वितरित किए गए। बाबा गोपाल दास टीम ने पौधों में पानी देने व देखभाल की जिम्मेदारी ली। इस मौके पर प्रेम देवी, सुनीता देवी, प्रमिला देवी, बीएसएफ कमांडेंट प्रकाशचंद यादव, सत्यवीर यादव नंबरदार, सूबेदार कृष्ण यादव, अरविंद, अनुज यादव, सूबेदार सतवीर यादव, सुभाष यादव, अतर सिंह यादव, सूबेदार धर्मवीर यादव, जीएसटी इंस्पेक्टर केशव यादव, रामधन यादव, परमवीर यादव, पंकज यादव, मोनू यादव, राजेंद्र यादव, दीपक शर्मा, संजय यादव, राकेश यादव, पंच दिनेश यादव, मनोज यादव, मास्टर बब्लू यादव, प्रमोद यादव, रामोवतार यादव, बॉम्बे यादव, रतन सिंह, नंबरदार अशोक यादव, बिल्लू प्रजापति, धोनी यादव, हंसराज यादव, मनोजनाथ, महेश यादव, भागीरथ यादव, रोमिन यादव, भरत यादव, रोहित यादव, सचिन यादव, अरविंद यादव, लवली यादव, अभिमन्यु यादव, ओम प्रकाश, रामबली, अमन शर्मा, अजय यादव, सौरव, दीपांशु यादव व रोहित यादव ने पौधारोपण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भाविप शाखा के 8 दिवसीय योग शिविर का समापन, रोगों से बचने के उपाय बताए

योग शिविर की शुरुआत अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर हुई थी। आठ दिवसीय योग शिविर में योगासन व प्राणायाम की बारीकियों के बारे में बताया गया

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

रेवाड़ी। शिविर में योगाभ्यास करते हुए योग साधक। फोटो : हरिभूमि

भारत विकास परिषद शाखा,श्रीराम मानव विकास एवं शिक्षा समिति, दी फीडरल बैंक लिमिटेड तथा अल्ट्रा सीमेंट के संयुक्त तत्वावधान में श्रीराम पैलेस झज्जर रोड पर आठ दिवसीय योग शिविर का शनिवार को समापन हो गया।

योग शिविर की शुरूआत अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर हुई थी। आठ दिवसीय योग शिविर में योगासन व प्राणायाम की बारीकियों के बारे में बताया गया, साथ ही सर्वाइकल, डिस्क, स्लिप, बीपी व शुगर रोगों से बचने के उपाय बताए गए। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। भारत विकास परिषद के प्रांतीय संयोजक पर्यावरण मुकेश सैनी ने स्वस्थ जीवन शैली में पर्यावरण की अहमियत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि नियमित योगाभ्यास करने से बीमारियों से बहुत दूर चले जाते हैं। शाखा अध्यक्ष दिनेश सैनी ने सभी प्रतिभागियों व सहयोगी संगठनों का धन्यवाद किया। इस मौके पर शाखा संरक्षक रमेश सचदेवा, सचिव रामकिशोर सैनी, कोषाध्यक्ष प्रेम मेहंदीरत्ता, हुक्म चन्द प्रजापत, डा. अनिल सैनी, नितिन गोयल, कुंदनलाल सैनी, मदनलाल सैनी, कृष्ण जांगिड़, अजय गुप्ता, मोहित सचदेवा, राकेश कुमार, राजबीर यादव व मनन सैनी सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

पीड़ित अनुराग ने ठग की बात को सही मान कर ऑफर मान लिया

घर बैठे पैसे कमाने का लालच देकर ठगी के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

- पुलिस ने दोनों आरोपियों को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया

हरिभूमि न्यूज ⏭कोसली

साइबर थाना पुलिस ने युवक को घर को बैठे रुपये कमाने का लालच देकर 1.26 लाख ठगी करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान देवांश अग्निहोत्री निवासी बानवाली गली जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश व उत्कर्ष अवस्थी निवासी बागमाह नारायण जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है।

रेलवे स्टेशन कोसली निवासी अनुराग ने पुलिस शिकायत में बताया था कि 13 जून को उसके मोबाइल नंबर पर घर बैठे रुपये कमाने का एक एक मैसेज आया था। अनुराग ने ठग की बात को सही मानकर ऑफर मान लिया। इसके बाद ठग ने उससे अपने अकाउंट में 150 रुपये डालवा लिए। इसके बाद उसने लगातार 150-150 करके कई बार पैसे अकाउंट में डाल दिए। उसने यूपीआई आईडी से कुल 5000 रुपये ट्रांसफर कर दिए। इसके बाद ठग ने अनुराग के खाते में 7000 रुपये डाल दिए, जिस पर अनुराग ने 5000 रुपए तथ फिर 28000 रुपये और डाल दिए। उसके बाद ठग के कहने पर अनुराग ने 88000 रुपए और ट्रांसफर कर दिए। इस तरह अनुराग ने साइबर ठग को कुल 1 लाख 26 हजार रुपये ट्रांसफर कर दिए, जिसके बाद साइबर ठग ने पैसे देने से मना कर दिया। इसके बाद अनुराग को साइबर ठगी के बारे में पता चला और उसने साइबर थाने में शिकायत दी। जांच के बाद साइबर थाना पुलिस ने दो आरोपी देवांश अग्निहोत्री निवासी बानवाली गली जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश व उत्कर्ष अवस्थी निवासी बागमाह नारायण जिला लखनऊ उत्तर प्रदेश को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस की ओर से प्रारंभिक पूछताछ में इस बात का खुलासा हुआ कि अनुराग के खाते से 88000 रुपये देवांश अग्निहोत्री के खाते में गए थे तथा आरोपी उत्कर्ष अवस्थी ने साइबर ठगों को देवांश का खाता उपलब्ध कराया था। पुलिस ने दोनों आरोपियों को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में साइबर ठगी के आरोपी। फोटो : हरिभूमि

कोसली अनाजमंडी के गेट पर जमा पानी से परेशानी

कोसली। कोसली के साल्हावास रोड़ पर अनाज मंडी के मुख्य गेट के पास एक अरसे से जलभराव होने के कारण लोगों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन प्रशासन एवं संबंधित विभाग की ओर से समस्या के समाधान की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। स्थानीय दुकानदार विपिन, अंकित, हिमांशु, जगदीश व मोहित ने बताया कि मंडी गेट के सामने वाटर सप्लाई की लाइन में रिसाव है, जिससे रोजाना पानी रिसकर सड़क पर जमा हो जाता है, लेकिन जन स्वास्थ्य विभाग समस्या की ओर ध्यान नहीं दे रहा है। सड़क पर पैदल आने जाने वाले लोगों यहां से निकलना दुश्वार हो चुका है। इसके अतिरिक्त बड़े वाहनों के यहां से गुजरते समय कीचड़ उछला कर उनकी दुकानों में पहुंच जाता है। लोगों ने प्रशासन इस समस्या का समाधान करने की मांग की है।

पुलिस ने खटावली व बुडानी में डोर टू डोर चलाया नशामुक्त अभियान

- नशा करने वालों की काउंसलिंग कराकर नशा छोड़ने के लिए प्रेरित कर रही टीम

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

रेवाड़ी। गांव खटावली व बुडानी में डोर टू डोर नशामुक्त अभियान चलाती पुलिस। फोटो : हरिभूमि

पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा के मार्गदर्शन में जिला पुलिस की ओर से युवाओं व आमजन को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करने और खेलों से जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया हुआ है।

जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम रोजाना डोर टू डोर अभियान चलाकर लोगों को नशे के विरुद्ध जागरूक कर रही है तथा गांव में नशा करने वालों की जानकारी लेकर उनकी काउंसलिंग कराकर नशा छोड़ने के लिए प्रेरित कर रही है। अभियान के तहत जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम ने शनिवार को गांव खटावली व बुडानी में डोर टू डोर जाकर लोगों को नशे से दूर रहने तथा शिक्षा व खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया। नशा मुक्त टीम ने लोगों को नशा न करने की शपथ भी दिलाई।

एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि नशा एक ऐसी बुराई है, जिससे व्यक्ति का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशा करने वाला व्यक्ति अपने साथ साथ पूरे परिवार का जीवन खराब कर देता है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले युवा पीढ़ी को नशे से बचाना होगा। उन्होंने कहा कि नशा बेचने वालों की असली जगह जेल में है, इसलिए नशे का कारोबार करने वालों की सूचना निःसंकोच होकर पुलिस को दें, पुलिस प्रशासन की ओर से कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए नामांकन आमंत्रित : एसडीएम

सिवानी। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (पीएमआरबीपी) के लिए नामांकन प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है। इस बारे में एसडीएम विजया मलिक ने बताया कि यह पुरस्कार देश के उन प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित करने के उद्देश्य से दिया जाता है जिन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार में कला एवं संस्कृति, खेल, नवाचार, विज्ञान, बहादुरी, समाज सेवा और शैक्षणिक उत्कृष्टता जैसी श्रेणियों में बच्चों का चयन किया जाता है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सैं.मी 10X 8 सैं.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

शहरी निकायों के अध्यक्षों का सम्मेलन तीन व चार जुलाई को

धारूहेड़ा। मानेसर में 3 व 4 जुलाई को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के शहरी स्थानीय निकायों के अध्यक्षों का राष्ट्रीय स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

नगर पालिका के चेयरमैन कंवर सिंह ने कहा कि जब सम्मेलन में देशभर से प्रतिनिधि हरियाणा आएंगे, तो उन्हें केवल प्रशासनिक दक्षता ही नहीं, बल्कि एक सशक्त और सुसंस्कृत हरियाणा का अनुभव कराया जाए। सम्मेलन का आयोजन लोकसभा सचिवालय, हरियाणा विधानसभा और हरियाणा सरकार के समन्वय में किया जा रहा है, जिससे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। विषय संवैधानिक लोकतंत्र और राष्ट्र निर्माण को मजबूत करने में शहरी स्थानीय निकायों की भूमिका पर आयोजित रहेगा।

जागरुकता एनसीबी टीम ने गांव साल्हावास में ग्रामीणों को नशे के प्रति किया जागरूक

युवाओं के भविष्य को अंधकार की ओर धकेल रहा नशा, इसे खत्म करना सभी की जिम्मेदारी : नीरज

- नागरिकों को गांव को नशा मुक्त रखने की शपथ दिलाई गई

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

रेवाड़ी। ग्रामीणों को नशे से संबंधित जानकारी देते डा. मित्तल। फोटो: हरिभूमि

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो जिला यूनिट की ओर से शनिवार को गांव साल्हावास में नशा विरोधी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में काफी संख्या में युवाओं व ग्रामीणों ने भाग लिया। कार्यक्रम में एनसीबी यूनिट इंचार्ज निरीक्षक नीरज कुमार, निशांत यादव, डा. घनश्याम मित्तल और डा.सीमा मित्तल मौजूद थे। वक्ताओं ने युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों व पंचायत प्रतिनिधियों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए सचेत किया। एनसीबी की ओर से प्रदेश भर में नशा तस्करों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई के साथ-साथ लोगों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर सभी नागरिकों को नशा न करने और अपने गांव को नशा मुक्त रखने की शपथ दिलाई गई। समाज से नशे को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रण लिया। एनसीबी निरीक्षक नीरज कुमार ने कहा नशा एक सामाजिक बुराई है। नशा युवाओं के भविष्य को अंधकार की ओर धकेल रहा है। इसे समाप्त करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि नशे के खिलाफ अभियान केवल पुलिस या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर जागरूक नागरिक का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि इन अभियानों का उद्देश्य आमजन में नशे के प्रति सकारात्मक सोच और सक्रिय सहभागिता विकसित करना है। कार्यक्रम में गांव के पूर्व सरपंच राजेंद्र पटेल, रामचंद्र, गोवर्धन, कृष्ण कुमार, सुबेदार साधूराम, सुमन देवी, पंच मवासी, बीरसिंह व भूपेंद्र सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे। सभी ने गांव को नशा मुक्त बनाने का संकल्प लिया। निरीक्षक नीरज कहा कि नशे की तस्करी या बिक्री की जानकारी मिले तो निडर होकर टोल फ्री नंबर 1933, ऑनलाइन शिकायत पोर्टल एनसीबीमानस. जीओवी.इन और हरियाणा एनसीबी के टोल फ्री नंबर 90508-91508 पर सूचना दें।

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

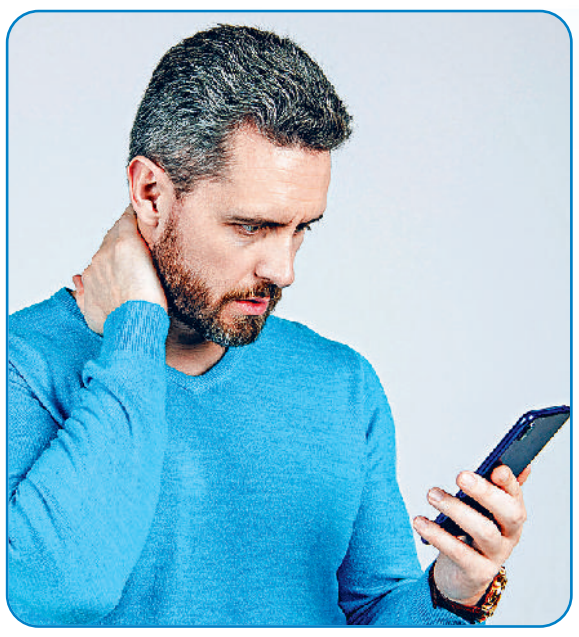

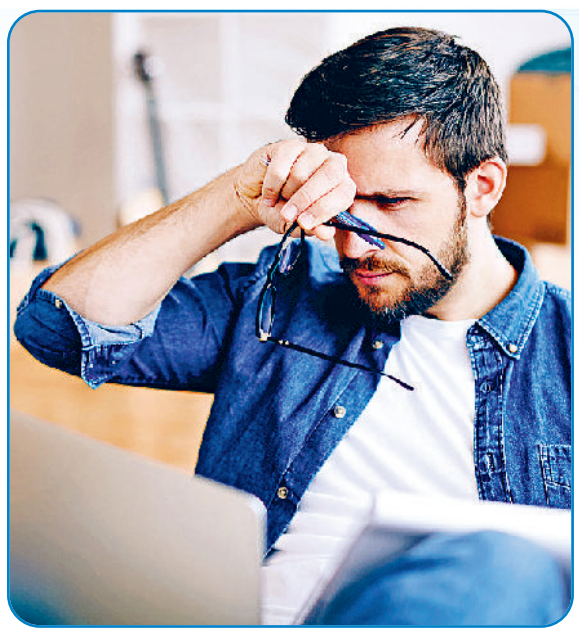

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण

लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

स्पेशल: वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलर: सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूज: कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्स: सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे- ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

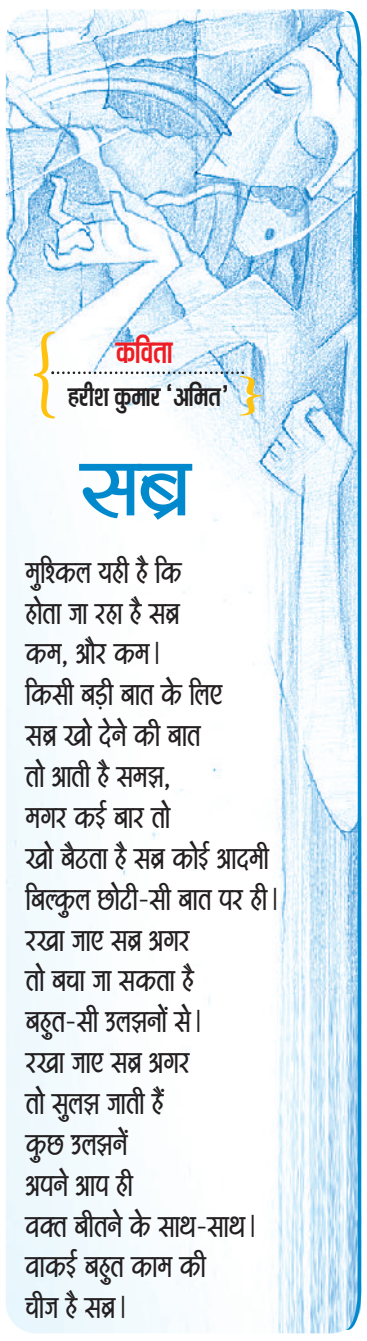

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

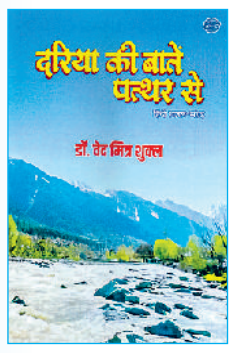

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तक: दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखक: डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्य:** 290 रुपए,
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

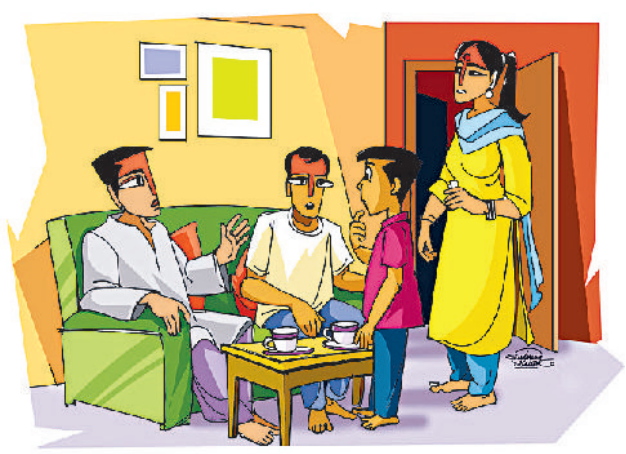

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवार्टर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

{ टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम }

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

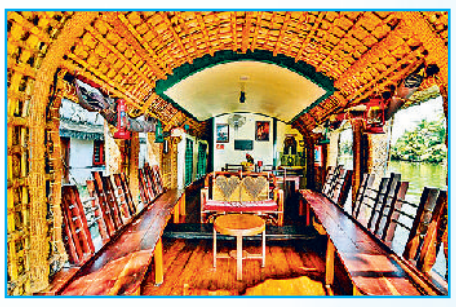

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

{ अचीवमेंट / सुनील कुमार महला }

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

{ उपयोगी पेड़ / वीना गौतम }

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

{ रोचक / शिखर चंद जैन }

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

{ सिने जगत / चेतना झा }

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *